AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

चित्रकार कन्हैलाल वर्मा की मेघदूत चित्रावली

ORIGINAL ARTICLE

Author
मिठाई लाल,
शोधार्थी, चित्रकला विभाग
दृश्य कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी, उत्तरप्रदेश, भारत

शोध सार

मेघदूत महाकवि कालिदास की अत्यंत लोकप्रिय रचना है जिसमें प्रकृति का सौंदर्यपूर्ण वर्णन बड़े ही सजीव रूप में किया गया है। प्रकृति मानव की सदैव सहचरिणी रही है एवं चाहे वह सुखी हो या दुखी सभी अवसरों पर प्रकृति मनुष्य के साथ साये की भांति उपस्थित रही है। मेघदूत में विरही यक्ष एवम यक्षिणी के मन की करुण गाथा वर्णित है। विरही यक्ष आषाढ़ मास में जब रामगिरी पर्वत पर प्रकृति के अद्भुत एवं सौंदर्य से परिपूर्ण रूप (मेघ) को देखता है तो वह अपनी प्रियतमा से मिलने हेतु व्याकुल हो उठता है। ऐसे में काले मेघ को दूत बनाकर हिमालय की गोद में बसी अलकापुरी में रह रही यक्ष–पत्नी वियोगिनी यक्षिणी के पास अपने मन के भाव को संदेश रूप में भेजता है। विद्वानों के अनुसार यह संपूर्ण खंडकाव्य ही सजीव चित्रपट है जिसे समय–समय पर चित्रकारों ने अपने अपने अनुसार रूप देने की कोशिश की है। इस कड़ी में राजस्थानी शैली के कुशल चित्रकार श्री कन्हैया लाल वर्मा ने मेघदूत से अत्यंत प्रभावित होकर लगभग 3 दर्जन चित्रों की रचना की जो अत्यंत सुंदर व सारगर्भित हैं। उन्हीं में से कुछ चित्रों के निर्माण की प्रक्रिया एवं उनकी विशेषता का सचित्र उल्लेख शोध में किया गया है।

मुख्य शब्द

आषाढ़, चित्ताकर्षक, लालित्यपूर्ण, अक्षतफल, हृदयस्पर्शी, कल्पना।

कालिदास द्वारा रचित मेघदूत खंडकाव्य जन–जन की लोकप्रिय रचना है। इसमें कवि कालिदास की सौंदर्यपूर्ण दृष्टि में प्रकृति एवं मानवीय भावों के संयोग से मनोहारी सजीव दृश्यों का अंकन हुआ है। मेघदूत दो बिछड़े हुए प्रेमी जनों की मनोःस्थिति पर आधारित रचना है जिसके अध्ययन से अपने प्रियजनों से बिछड़े हुए जनों को उनकी स्वयं की गाथा प्रतीत होती है। वर्तमान में भी जन–मानस के साथ समूची प्रकृति का मेघ के साथ अत्यंत गहरा लगाव है एवं पूरे वर्ष सभी को वर्षाऋतु का बेसब्री से इंतजार रहता है। काले घने मेघ आषाढ़ के मास में जब आसमान में घिरते हैं तो मानव मन में अनगिनत उत्कंठाएं हिलोरे तो लेने ही लगती हैं, साथ ही पशु–पक्षी भी थिरक उठते हैं। ग्रीष्म ऋतु के गर्म लू से तपती हुई हवा जब वर्षा के जलकणों से शीतल होकर लोगों को स्पर्श करती है, तो तन–मन की तपिश धुल जाती है एवं प्रत्येक प्राणी में नव प्राण का संचार हो उठता है।

कालिदास ने मेघदूत खंडकाव्य में मेघ के स्वरूप का विस्तार से लालित्यपूर्ण एवं चित्ताकर्षक वर्णन किया है।

विद्वानों के अनुसार यदि आपको कविता की सुकुमारता देखनी हो, भावों की सागर–सादृश्य गहराई और हिमालय–तुल्य ऊंचाई को महसूस करना हो, शारदी ज्योत्सना तथा वासंती वैभव का एकत्र सम्मिश्रण देखना हो, ग्रीष्म के धर्म बिंदुओं एवं शिशिर के तुहिन कणों की विशिष्टता का एक साथ आंकलन करना हो तो महाकवि कालिदास की अमृत – निष्यन्दिनी लेखनी के अक्षतफल मेघदूत को एक बार अवश्य पढ़ना चाहिए, क्योंकि मेघदूत के माध्यम से कालिदास ने भारतीय संस्कृति में वर्षा ऋतु के महत्व, उसकी उपयोगिता व सुंदरता को बड़े ही सौंदर्यपूर्ण व मार्मिक तरीके से सजीव– चित्रण किया है। मेघदूत के मूल में प्रकृति को रखा गया है, क्योंकि कालिदास इसे मानवीय संवेदनाओं का मूल स्रोत मानते हैं इसीलिए प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन बड़े ही रुचिकर तरीके से अपने इस ग्रंथ में किया है, जिसे निम्न श्लोक से और भी अधिक समझा जा सकता है।

नीपं दृष्ट्वा हरित कपिशं केसरैरर्धरुढैः
आविर्भूत प्रथम मुकुलाः कन्दलीश्चानुकच्छम्।
जग्धवारण्येष्वधिकसुरभि गन्ध माघ्राय चोर्व्याः
सारङ्गास्ते जलल वमुचः सूचयिष्यन्ति मार्गम्।। पू.मे. 21.

अर्थात्! हे मेघ जिस समय तुम वृष्टि करते हुए चले जा रहे होगे उस समय आधे पके, हरे पीले कदम्ब, पुष्पों पर मंडराते भ्रमर, दलदलों में नवीन विकसित कंदली की पत्तियों को चरते हुए हरिण अरण्य भूमि की गंध सूंघते हुए तुम्हें मार्ग बतलाते चलेंगे। इस प्रकार कालिदास के प्रकृति चित्रण में अन्तः एवं बाह्य दोनों प्रकृति का सुंदर एवं हृदयस्पर्शी चित्रण है।

मेघदूत की संक्षिप्त कथा परिचय

मेघदूत की कथा एक विरही यक्ष पर केंद्रित है जो हिमालय की गोद में स्थित अलकापुरी में महाराज कुबेर के यहां उनके सेवक के रूप में सलंग्न था। यक्ष नव विवाहित था एवं अपनी पत्नी के सौंदर्य के प्रभाव से सदैव उसी के ध्यान में मग्न रहता था। एक दिन असावधानी वश यक्ष महाराज कुबेर की सेवा में ताजे पुष्प के स्थान पर मुरझाए हुए पुष्प रख दिया। जब कुबेर को यक्ष के इस भूल का भान हुआ तो वह क्रोधित हो गए एवं यक्ष को दंड देते हुए आदेश दिया कि तुम एक वर्ष तक अपनी पत्नी से दूर अलकापुरी के बाहर किसी निर्जन स्थान में व्यतीत करोगे। इस निर्णय से यक्ष भीतर ही भीतर अपनी पत्नी की विरह की कल्पना मात्र से ही तड़प उठा, परंतु अपने मालिक की आज्ञा को शिरोधार्य कर यक्ष अपनी प्रियतमा से दूर मध्यप्रदेश में स्थित रामगिरि पर्वत पर एक वर्ष व्यतीत करने हेतु चला गया। यह वही स्थान था जहां पर श्री राम ने अपने वनवास के दौरान पत्नी सीता एवं अनुज लक्ष्मण के साथ निवास किया था। रामगिरि पर्वत पर आठ मास तो यक्ष ने पत्नी की विरह में व्यतीत कर लिया किंतु जब आषाढ़ का महीना प्रारंभ हुआ तो काले–काले मेघ को देखकर यक्ष का हृदय अपनी पत्नी से मिलने हेतु व्याकुल हो उठा। वह मेघ से प्रार्थना करने लगा कि वह उसका संदेशा हिमालय स्थित अलकापुरी ले जाए जहां यक्ष की नव विवाहिता पत्नी अपने पति की याद में किसी प्रकार विरह के दिन व्यतीत कर रही है। यक्ष मेघ को अपना प्रिय मित्र समझकर रामगिरि से अलकापुरी तक पहुंचने का विस्तार पूर्वक मार्ग बताता है।मेघदूत खंड काव्य दो खंडों में विभक्त है, पूर्व और उत्तर मेघ। पूर्व मेघ में रामगिरि पर्वत से लेकर अलकापुरी तक के रमणीय मार्ग तथा स्थानों का मनोहारी वर्णन है। उत्तर मेघ में हिमालय की गोद में स्थित अलकापुरी एवं यक्ष –पत्नी की वियोगजनित अवस्था की अभिव्यक्ति और अंत में यक्ष का संदेश वर्णित है जिसे मेघ द्वारा प्रेषित करने का मार्मिक उल्लेख है।

इस प्रकार यह संपूर्ण खंडकाव्य ही एक सजीव चित्रपट की भांति दिखलाई पड़ता है। यही कारण है कि विविध विधा के रचनाकार मेघदूत से प्रेरणा लेते रहे हैं एवं इससे चित्रकार भी अछूता नहीं है। अनेकों चित्रकारों ने मेघदूत पर आधारित चित्रों का निर्माण किया है जिसमें कन्हैया लाल वर्मा भी शामिल हैं।

चित्रकार कन्हैयालाल वर्मा का संक्षिप्त जीवन– वृत्त

कन्हैया लाल वर्मा का जन्म 7 मार्च 1943 ई. में सांभर लेक, राजस्थान में हुआ। बचपन से ही कला, साहित्य में गहरी रूचि होने के कारण आपने चित्रकला विषय में स्नातक किया। तत्पश्चात् चित्रकला को ही कैरियर के रूप

में चुना एवं कला व्याख्याता के रूप में कार्य करने लगे, साथ ही साथ राजस्थानी शैली में चित्रण भी करते रहे। श्री वर्मा सन 1971ई. से ही समय–समय पर चित्रकला प्रदर्शनियों में भी सहभागिता करते रहे जिसके अंतर्गत आठ एकल प्रदर्शनियां एवं दो दर्जन के लगभग समूह प्रदर्शनियों में भागीदारी की जिसका आयोजन राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किया गया। कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए श्री वर्मा को अनेकों पुरस्कार एवं सम्मान प्रदान किए गए। इसमें प्रमुख रुप से राजस्थान ललित कला अकादमी पुरस्कार, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप राजस्थान पुरस्कार, राजस्थान गवर्नर सम्मान राष्ट्रपति सम्मान आदि शामिल हैं। साथ ही राजस्थान की लघु चित्र शैली में विशेष चित्रण करने के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा सन 1983, 85, 89,91 ई. में फेलोशिप भी प्रदान की गई जो किसी चित्रकार के लिए एक बड़ी उपलब्धि होती है। कन्हैयालाल वर्मा ने राजस्थानी शैली में चित्रों का निर्माण किया, इन्होंने धार्मिक विषयों के साथ ही साहित्यिक आख्यानों पर आधारित श्रृंखलाओं का निर्माण किया जो अत्यंत लोकप्रिय हुए। श्री वर्मा के चित्र वर्तमान में देश व विदेश के महत्वपूर्ण सरकारी, अर्द्धसरकारी व निजी संग्रहो में संग्रहित हैं।

कन्हैयालाल वर्मा का मेघदूत चित्रण

चित्रकार कन्हैयालाल ने सन् 1989 ई. में मेघदूत को आधार मानकर लगभग 3 दर्जन चित्रों का निर्माण किया क्योंकि श्री वर्मा का झुकाव मेघदूत की ओर बचपन से ही था एवं जब वह 18 वर्ष के थे तो पहली बार मेघदूत का अध्ययन किया था, साथ ही कुछ चित्र भी निर्मित किए थे। इसके पश्चात् वर्ष में एक बार वह इस खंडकाव्य को अवश्य पढ़ते थे। चित्रकार के अनुसार यूं तो संपूर्ण मेघदूत ही चित्रण करने योग्य है लेकिन जिन श्लोकों ने मेरे अंतः स्थल में जगह बनाई उसको मैंने राजस्थानी परंपरागत चित्र शैली में चित्रित करके स्वयं की मौलिकता प्रदान की है। इसमें वसली (विशेष प्रकार से निर्मित कागज) को आधार बनाकर देशी खनिज रंगों का प्रयोग किया गया है। इन रंगों को घोलने के लिए मैंने वर्षा से प्राप्त जल का प्रयोग किया है। प्रकृति के सुंदर दृश्य को चित्रित करने हेतु मैंने उसे जी भर देखा है। आकाश में छाने वाली घटाएं और घुमड़ते हुए बादल तथा पल–पल परिवर्तित होता उसका स्वरूप जिसे मैं सदैव निहारता ही रहता हूं। मेघदूत चित्रण से पहले मैंने हिमालय की यात्रा भी की एवं उस दौरान अनंत सुदूर के साथ बादलों का दूर–दूर तक फैलाव तथा उसके विश्राम करने के ढंग को भी मैंने घंटों निहारा है। चित्रकार कन्हैया लाल वर्मा ने मेघदूत पर आधारित चित्रों का निर्माण किया है जिनका विवरण निम्न हैः–

आषाढ़ का पहला दिन, सुस्वागतम, हे जलद! प्रतीक्षा का अंत, प्रियदर्शन आश्चर्यमुग्ध कृषक बालिकाएं, वर्षा का आनंद, संध्या–आरती, केश–संस्कार, संध्या – नृत्य, तांडव नृत्य, कृष्णाभिसारिका, अभिषेक, कौतूहल, शिला दर्पण, सोपान, क्रीड़ासक्त, कैलाश एवं अलका, ऋतु–नारी, रसिक यक्ष, मुग्धा, शुक्लाभिसारिका, बांकी चितवन, श्यामा, वियोग के क्षण, मलिन वसना, विनोद रहिता, चंद्रकिरण,आद्र हृदय, स्वप्न दर्शन, मानिनी, मानकालीन, शुभशंसा।

इनमें से मैंने 6 चित्रों का वर्णन किया है जो निम्नलिखित हैंः–

चित्र.1: आषाढ़ का पहला दिन (साइज – 22x17 इंच, माध्यम – टेम्परा, संग्रह – निजी संग्रह)

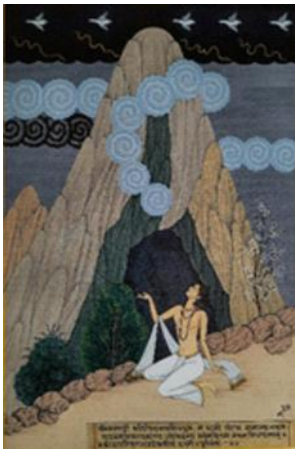

तस्मिन्नद्रौ कतिचिद बला विप्र युक्तः स कामी
नीत्वा मासामासान्कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः।
आषाढ़स्य प्रथमदिवसे मेघमा श्लिष्ट सानुं
वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श।। पू.मे 2

उस विरही यक्ष ने आठ मास तो अपनी प्रियतमा के विरह में किसी प्रकार राम गिरि पर्वत पर व्यतीत कर लिया। यक्ष पत्नी की याद में इतना दुर्बल हो गया था कि हाथ की कलाई में पहना हुआ स्वर्ण कंगन भी सरकर गिर गया। आषाढ़ का प्रथम दिन आते ही उसने पहाड़ की चोटी पर झुककर मंडराते हुए मेघ को देखा। वह इतना सुंदर लग रहा था कि मानो कोई हाथी किसी टीले से टकराकर खेल रहा हो।

इस श्लोक में वर्णित विषय के अनुरूप चित्रकार ने बड़े मनोयोग से चित्रण किया है, जिसमें ऊंची पहाड़ी की

चोटी पर मेघ को घिरते हुए दिखलाया गया है। नीचे चट्टान पर दुर्बल शरीर वाला यक्ष चित्रित है एवं बड़ी उत्सुकता से मेघ की ओर सिर उठाकर देख रहा है तथा मुखमंडल पर याचना का भाव चित्रित है। यक्ष को सफेद वस्त्र पहने हुए दिखलाया गया है जो हवा के वेग से उड़ रहा है। गले में रुद्राक्ष माला चित्रित है जो उसके भक्त रूप को भी प्रदर्शित कर रहा है। यक्ष के आस–पास में पत्थर के चट्टानों व वनस्पतियों को भी अलग–अलग रंगों में चित्रित किया है जो चित्र के सौंदर्य को बढ़ा रही हैं । ऊपर आसमान में सफेद बगुलों को उड़ते हुए दिखलाया गया है। चित्रकार ने अपनी रंग योजना के अनुसार सौम्य रंगो (मिट्टी रंग, हल्का नीला, सफेद, हरा आदि) का प्रयोग किया है। चित्र में चित्रित दृश्य को देखकर यह प्रतीत होता है कि चित्रकार ने श्लोक में वर्णित दृश्य को सजीवता देने का पूर्ण प्रयास किया है।

चित्र. 2: संध्या आरती (साइज – 22x17 इंच, माध्यम – टेम्परा, संग्रह – निजी संग्रह)

अप्यन्यस्मिञ्जलधर! महाकालमासाद्य काले
स्थातव्य्यं ते नयनविषयं यावदत्येति भानुः।
कुर्वन्संध्याबलिपटहतां शूलिनः श्लाघनीया–
मामन्द्राणां फलमविकलं लप्स्यते गर्जितानाम्।। पू.मे 34

हे जलद! तुम दिन में किसी भी समय श्री महाकाल के धाम पहुंचो, लेकिन सूर्यास्त होने तक वहां अवश्य ठहरना। प्रदोषकाल में जब भगवान आशुतोष की भव्य आरती होने लगे तब तुम भी अपने गर्जन रूपी नगाड़ों की मधुर ध्वनि करने लगना। इससे तुम्हें श्री महाकाल की पूजा करने का अवसर तो मिलेगा ही तुम्हारा जीवन भी सफल हो जाएगा। उपरोक्त वर्णन के अनुरूप चित्रकार ने इस चित्र का निर्माण किया है। उज्जैन स्थित श्री महाकाल के ज्योतिर्लिंग को चित्र के माध्यम से चित्रित किया गया है जिस पर ऊपर से मेघ जलधार गिरा रहे हैं। मेघ के गर्जन को परिभाषित करने हेतु चित्रकार ने बादलों के समीप ही मेघ को मानवीय रूप में नगाड़ा बजाते हुए चित्रित किया है। चित्र में नीचे पुजारियों को पारंपरिक वेशभूषा में पूजा अर्चना करते हुए दिखाया गया है। संगीतमय ध्वनि हेतु नगाड़ा, डमरु, घंटी आदि वाद्ययंत्रों को भी पुजारियों द्वारा बजाते हुए अंकित किया गया है। साथ ही दो स्त्रियों को चामर डुलाते हुए भी दिखलाया गया है। पुजारियों के मुखमंडल पर प्रसन्नता एवं खुशी का भाव स्पष्ट रूप से झलक रहा है। उनके वस्त्रों को पारंपरिक रूप में निर्मित किया गया है। चटख लाल, पीले एवं काले रंगों के प्रयोग से चित्र अत्यंत मनोहारी व सौंदर्यपूर्ण बन गया है।

चित्र. 3: कृष्णाभिसारिका (साइज – 22x17 इंच, माध्यम – टेम्परा, संग्रह – निजी संग्रह)

गच्छन्तीनां रमणवसतिं योषितां तत्र नक्तं
रुद्धालोके नरपतिपथे सूचिभेद्यैस्तमोभिः।
सौदामन्या कनकनिकषस्निग्धया दर्शयोर्वी
तोयोत्सर्गस्तनितमुखरो मा स्मम भूर्विक्लवास्ताः।। पू.मे 37 .

अंधेरी रात्रि में उज्जैन की रमणियाँ अभिसार के लिए प्रियतमों के घर जाती है। घनघोर अंधकार के कारण उन्हें राजपथ दिखलाई नहीं देता है। तुम अपनी श्यामवर्णी कसौटी पर सोने की बिजली रूपी रेखा हल्के से चमका देना। हे जलद ! तुमको गर्जना और बरसना तो कदापि नहीं है, क्योंकि वह बड़ी डरपोक होती हैं, अतः घबरा जाएंगी।

उपरोक्त वर्णन के अनुसार चित्रकार ने चित्रण करने का पूर्ण प्रयास किया है। गहरे नीले परिप्रेक्ष्य के साथ एक श्रृंगारित नायिका (अभिसारिका) अपने प्रियतम से मिलने जा रही है। मुखमंडल पर भय, संकोच के साथ अपने प्रिय से मिलने की बेसब्री का भाव अंकित है। नायिका को सिर झुकाए हुए दोनों हाथ से उड़ते हुए आंचल को

संभालते हुए चित्रित किया गया है। गहरे नीले रंग में अंधेरी रात को बड़ी कुशलता से दिखाया गया है। चित्र के ऊपरी हिस्से में मेघ चमकते हुए सजीव रूप में चित्रित किया गया है जो चित्र को और अधिक सौंदर्य प्रदान कर रहा है। रंग एवं संयोजन की दृष्टि से यह एक उत्कृष्ट चित्र है।

चित्र. 4: मुग्धा (साइज – 22x17 इंच, माध्यम – टेम्परा, संग्रह – निजी संग्रह)

नीवीबन्धोच्छ्वसितशिथिलं यत्र बिम्बाधाराणां
क्षौमं रागादनिभृतकरेष्वाक्षिपत्सु प्रियेषु।
अर्चिस्ष्तुङ्गानाभिमुखमपि प्राप्ष्तरत्नप्रदीपान्
ह्रीमूढानां भवति विफलप्रेरणा चूर्णमुष्टिः।। उ. मे. 7

अलका के भवनों में कामनियों के अधोवस्त्र काम के वेग में ढीले हो जाते हैं। उनकी गांठ को प्रियतम अपनी चपल हाथों से खींचते हैं तो सर्वांग प्रकट हो जाने के भय से मुग्धाएं रत्न दीपों को कुकुंभ डालकर बुझाना चाहती हैं। हे मेघ! उन भोली कामनियों का यह प्रयास व्यर्थ ही जाता है क्योंकि रत्न के दीपक को कुकुम्भ डालने से बुझाए नहीं जा सकते।

उपर्युक्त प्रसंग को चित्रकार ने बड़ी कुशलता से चित्रित किया है जिसमें नायक नायिका के वस्त्र को अपने एक हाथ से खींच रहा है, उसका दूसरा हाथ नायिका के कंधे पर है। नायिका शर्म के कारण एक हाथ से जलते हुए दीपक पर कुकुम्भ डाल रही है जिससे वह बुझ जाए। नायिका के मुखमंडल पर लज्जा का भाव है इसलिए वह दीपक की तरफ मुख ना करके दूसरी ओर देख रही है। नायिका को स्वर्ण एवं रत्नों के आभूषणों से सुसज्जित किया गया है। सुंदर शरीर पर वस्त्रों का चित्रण नायिका की खूबसूरती को अत्यधिक बढ़ा रहा है। नायक को भी श्यामल रंग में सुडौल शरीर के साथ दिखलाया गया है जो उचित वस्त्र आभूषणों से सुसज्जित है। परिप्रेक्ष्य में अलंकृत महल का भाग चित्रित है एवं उसके पीछे काली घनी रात को धूसर एवं काले रंगों के मिश्रण से निर्मित किया गया है। संपूर्ण चित्र सुंदर संयोजन, विषय के अनुरूप रंग योजना एवं सजीव अंकन से अत्यंत प्रभावशाली बन गया है।

चित्र. 5: वियोग के क्षण (साइज – 22x17 इंच, माध्यम – टेम्परा, संग्रह – निजी संग्रह)

आलोके ते निपतति पुरा सा वलिव्याकुला वा
मत्ध्सादृश्य विरहतनु वा भावगम्यं लिखन्ती।
पृच्छन्ती वा मधुरवचनां सारिकां पञ्जरस्थां
कच्चिद्भर्तुः स्मरसि रसिके! त्वं हि तस्य प्रियेति।। उ.मे. 25

हे मेघ ! मेरी पत्नी या तो देव पूजा में लगी हुई दिखाई देगी या उसे मेरा वियोगजनित कृष– शरीर चित्रित करते हुए पाओगे या पिंजरे की मधुर भाषिणी मैना से यह पूछते हुए पाओगे कि हे रसके! तू स्वामी की बड़ी प्यारी थी, क्या तुझे भी स्वामी याद आते हैं?

यह चित्र चित्रकार की कुशलता को व्याख्यायित कर रहा है कि किस प्रकार से उसने श्लोक में वर्णित तीनों दृश्यों को भावपूर्ण तरीके से चित्रित कर दिया है। इसमें यक्षिणी के तीन अलग–अलग रूपों को चित्रित किया गया है जिसमें वह सर्वप्रथम यक्ष का चित्रण कर रही है एवं दूसरे में वह हाथ जोड़कर पूजा में संलग्न है, तीसरे रूप में वह अपने पालित मैना से बात कर रही है। इसमें एक विशेष बात यह है कि प्रत्येक आकृति में यक्षिणी के मुखमंडल पर एक ही भाव अंकित है और वह यह कि वह अपने पति की याद में दुखी है। सभी में एक समान वस्त्राभूषण एवं केश विन्यास निर्मित हैं। चित्र को सुंदर एवं प्रभावी बनाने हेतु यक्षिणी के आसपास केले के पत्तों को चित्रकार ने अपनी कल्पना के आधार पर चित्रित कर दिया है।

नीचे घास को हरे रंग से चित्रित किया गया है एवं परिप्रेक्ष्य को काले रंग में चित्रित किया गया है। ऊपर आसमान में मेघ को अपनी विशेष शैली में चित्रित कर चित्र को बड़े ही आकर्षक रूप में बना दिया गया है जिसके पास सफेद बगुलों को उड़ते हुए चित्रित किया गया है। चित्र में मुख्य रूप से लाल, पीले, नीले, हरे और सफेद रंगों का प्रयोग किया गया है जिसके माध्यम से अलकापुरी में यक्ष की विरह में व्यथित यक्षिणी की मार्मिक मनोदशा को प्रदर्शित किया गया है। यह चित्र सभी दृष्टियों से उच्चकोटि का है।

चित्र 6: मानिनी (साइज – 22x17 इंच, माध्यम – टेम्परा, संग्रह – निजी संग्रह)

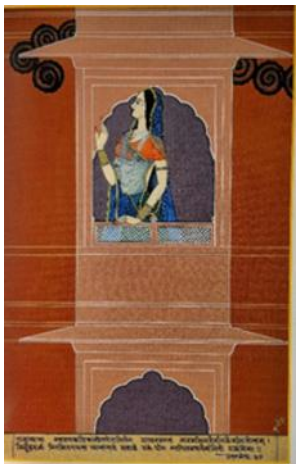

तामुत्थाप्य स्वजलकणिकाशीतलेनानिलेन
प्रत्य्याश्वास्तां सममभिनवैर्जालकैर्मालतीनाम्।
विद्युद्गर्भः स्तिमितनयनां त्वत्सनाथे गवाक्षे
वक्तुं धीरः स्तनितवचनैर्मानिनीं प्रक्रमेथाः।। उ. मे. 40.

हे मेघ! अलका के भवन में तुम मेरी सोई हुई पत्नी को वर्षा की ठंडी ठंडी बयार से जगा लेना, फिर उसको मालती की नवीन कलियों के समान खिलने देना। वह माननीय जब तुमको टकटकी लगाकर खिड़की पर बैठा हुआ देखे तो अपनी चपला को भीतर रखते हुए मंद–मंद गर्जन कर मेरा संदेश कह देना।

उपर्युक्त प्रसंग पर आधारित चित्र में चित्रकार ने यक्षिणी को केंद्र में रखकर चित्रण किया है। इसमें यक्षिणी अपने भव्य महल के ऊपरी भाग में अटारी पर खड़ी है एवं झरोखों से बड़ी उत्सुकता से मेघों की तरफ देख रही है। ठंडी पवन के झोंके एवं घने बादलों को देखकर यक्षिणी का मुरझाया हुआ रूप खिल गया है। वह सुंदर वस्त्राभूषण से सुसज्जित है एवं चेहरे पर उत्सुकता के साथ उम्मीद का भी भाव है कि यह काले बादल उसके प्रियतम का संदेशा अवश्य लाए होंगे। (वर्तमान में भी सावन मास में जब आसमान पर काले–काले बादल घुमड़ते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि यह मेघ दूर देश में रहने वाले परदेशियों का संदेशा उनके प्रियजनों तक पहुंचाने जा रहे हैं।) इस तथ्य को चित्रकार ने बड़ी बारीकी से परखा है एवं अपने इस चित्र में समाहित भी किया है। कत्थई रंगों की आभा में महल एवं उसके पीछे परिप्रेक्ष्य को दिखाया गया है जिससे नीले एवं नारंगी रंग के वस्त्रों से सुसज्जित सुघर वर्ण वाली नायिका के रूप को अत्यधिक स्पष्ट रूप से दिखलाया जा सके। साथ ही लयात्मक, स्पष्ट रेखाओं एवं जालियों के कलात्मक अंकन से भवन को भी विषय के अनुरूप उत्कृष्ट रूप में चित्रित किया गया है।

निष्कर्ष

चित्रकार कन्हैया लाल वर्मा ने मेघदूत श्रृंखला को जीवंत रूप में चित्रित कर संपूर्ण मेघदूत को एक सजीव स्वरूप प्रदान किया है। यदि किसी ने मेघदूत का अध्ययन नहीं भी किया है तो वह इन चित्रों के माध्यम से संपूर्ण खंडकाव्य को समझ सकता है जो चित्रकार का कालिदास एवं उनकी लोकप्रिय रचना मेघदूत खंडकाव्य प्रति अगाध प्रेम को प्रदर्शित कर रहा है।

श्री वर्मा द्वारा मेघदूत के प्रमुख प्रसंगों पर आधारित सभी चित्र अत्यंत महत्वपूर्ण सारगर्भित एवं प्रसांगिक है। यह पूर्ण रूप से श्लोंकों के अनुरूप में वर्णित विशेषताओं के आधार पर बड़ी ही सजीवता से उकेरे गये हैं। यह चित्र इस बात का प्रमाण है कि कालिदास का चित्रकला में भी अत्यधिक महत्व है एवं चित्रों की दृष्टि से यदि देखा जाए तो कालिदास ने अपनी महनीय दृष्टि से प्रत्येक प्रसंग को इतनी सजीवता से वर्णित किया है कि वह एक चित्र की भांति दिखलाई पड़ते हैं। यही कारण है कि चित्रकार इन्हें पुनः–पुनः चित्रित करना चाहता है।

संदर्भ सूची

1. ऋषि उमाशंकर शर्मा, *संस्कृत साहित्य का इतिहास,* चौखंबा भारती अकादमी वाराणसी 1960।
2. द्विवेदी कपिल देव, *संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास,* रामनारायणलाल विजय कुमार, इलाहाबाद, 2016।
3. शास्त्री गौरीनाथ, *लौकिक संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास,* चौखंभा विद्याभवन, वाराणसी, 2013।
4. उपाध्याय बलदेव, *संस्कृत वांग्मय का वृहद इतिहास,* उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ, 1999।
5. जैन राकेश कुमार, *संस्कृत साहित्य का इतिहास,* रचना प्रकाशन, जयपुर, 2019।
6. त्रिपाठी रमाशंकर, *संस्कृत साहित्य का प्रमाणिक इतिहास,* चौखंभा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी 2017।
7. https://en.m.wikipedia.org
8. https://hi.m.wikipedia.org
9. https://navankura.wordpress.com
10. https://www.britannica.com
11. https://www.exoticindiaart.com
12. https://chaukhamba.co.in

——==00==——